जब आप
किसी को नीचा
दिखाते हो तब
अपनी पहचान देते हो।
– अज्ञात

महामारी के कई दूरगामी परिणाम

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा कि कोरोना एक स्वास्थ्य संकट जरूर है लेकिन इस महामारी के कई दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। जैसे, आज जब तमाम देशों की सरकारें इस आपदा से निपटने में जुटी हुई हैं, आतंकी संगठन इसका फायदा उठा सकते हैं।

मनमोहन शाह।

एक संकट न जाने कितनी तरह की समस्याएं अपने साथ लेकर आता है। अक्सर हमारा ध्यान मूल आपदा पर रहता है, उससे जुड़ी चली आ रही अन्य विपत्तियों को प्रायः हम नजरअंदाज कर जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने ऐसी ही कुछ संभावित चुनौतियों की ओर संकेत किया है, जो कोरोना की वजह से आ सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा कि कोरोना एक स्वास्थ्य संकट जरूर है लेकिन इस महामारी के कई दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। जैसे, आज जब तमाम देशों की सरकारें इस आपदा से निपटने में जुटी हुई हैं, आतंकी संगठन इसका फायदा उठा सकते हैं। खास तौर से जैविक आतंकवाद का खतरा बहुत बढ़ गया है। विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक को संबोधित करते हुए गुटेरेस ने गुरुवार को कहा कि 'कोरोना वायरस की महामारी से निपटने की तैयारी न होने और उससे लड़ने में कमजोरी जाहिर होने से बायोटेररिस्ट्स को एक मौका मिल गया है और जैविक हमले होने का खतरा और बढ़ गया है।' उन्होंने कहा कि आतंकी हमलों की वजह से हिंसा बढ़ सकती है और कोरोना महामारी के खिलाफ जारी युद्ध में हमारे प्रयासों के लिए मुश्किल पैदा हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि इस महामारी के कारण शरणार्थियों और वंचित लोगों के लिए मानवाधिकारों का संकट खड़ा हो सकता है। उन्होंने इस बात पर चिंता प्रकट की कि कोरोना से निपटने के क्रम में स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच को लेकर भेदभाव बरता जा रहा है और जहां–तहां मीडिया पर प्रतिबंध भी लगाया जा रहा है। इस तरह अभिव्यक्ति की आजादी को लेकर अधिनायकवाद हावी हो रहा है। गुटेरेस की इन बातों को गंभीरता से लेने की जरूरत है। सचाई यह है कि कई देशों में पूरा प्रशासनिक तंत्र ही कोरोना से जूझने में जुटा है। सुरक्षाकर्मी भी इसी काम में लगे हुए हैं। ऐसे में उपद्रवी तत्व अगर कहीं कुछ करते हैं तो भारी समस्या आ सकती है। इसके लिए अतिरिक्त सावधानी अपेक्षित है। हमें अपने समाज में एक–दूसरे के प्रति विश्वास बनाए रखना होगा। सभी देश एक–दूसरे से सूचनाएं शेयर करें और संवाद बनाए रखें तो आतंकवादियों को मौके का फायदा उठाने से रोका जा सकता है। यह लड़ाई तभी सफल होगी जब सभी देशों की जनता इसमें साथ दे। इस बीच सरकारों को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे जनता के किसी हिस्से में सत्ता के प्रति अविश्वास पनपे। गलत खबरों को दबाने के नाम पर मीडिया के अधिकारों में कटौती लोगों को संदेह से भर देती है, इसलिए इससे बचना चाहिए। जहां तक जैविक खतरे की बात है तो भारत ने पहले ही इस संबंध में हुई अंतरराष्ट्रीय संधि को और मजबूत बनाने की मांग की है, जिस पर संयुक्त राष्ट्र को ध्यान देना चाहिए। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में सभी देश उसको एक संयोजक के रूप में स्वीकार करें और उसके जरिए आपस में तालमेल बनाए रखें।

क्रम और अव्यवस्था

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

प्रकृति अर्थपूर्ण है। हालांकि, भिन्न भिन्न लोगों के लिए इसका अर्थ भिन्न भिन्न प्रकार का होता है। एक कवि की प्रकृति के प्रति अभिव्यक्ति एक वैज्ञानिक द्वारा की गई व्याख्या से बिलकुल अलग रहती है। हालांकि दोनों इसके सत्य को देखने की कोशिश करते हैं। सत्य एकल और साधारण होता है, लेकिन इस तक पहुँचने के कई सारे व कठिन मार्ग है, इनमें से प्रत्येक मार्ग प्रकृति के अलग–अलग रंगो को दर्शाता है, एक अंग्रेज कवि ने पूछा "यदि शीत ऋतु आ गई है, तो क्या बसंत बहुत दूर हो सकता है?" यह सत्य है क्योंकि प्रकृति में कुछ सांसारिक घटनाएं एक निश्चित अवधि में होती है जैसे कि मौसम का परिवर्तन। समयकाल जैसे एक दिन, महीना व साल भी नियतकालिक है।

संपादकीय

दोहराव और नहीं

2003 की महामारी लाने वाले सार्स (सीवियर अक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम) कोरोना वायरस की ही तरह सार्स कोरोना वायरस 2 (सार्स कोव–2) के बारे में भी यह करीब–करीब तय है कि यह चमगादड़ों से आया है और मनुष्यों में प्रवेश का मौका इसे वूहान की 'वेट मार्केट' में मिला। ऐसे बाजारों में पालतू पशुओं और जंगली जानवरों की जमीन पर और समुद्र में पाई जाने वाली तमाम प्रजातियां लाई जाती हैं और अपने सारे रोगाणुओं के साथ मनुष्यों के भोजन के लिए बेची जाती हैं। इन बाजारों में खरीदी–बेची जाने वाली लगभग सारी फूड सप्लाई चेन उन वन्य जीवों से जुड़ी होती है जिनका मारा जाना गैरकानूनी है। दशकों से दुनिया की संरक्षणवादी बिरादरी इस व्यापार को रोकने की जी–तोड़ कोशिश कर रही है, पर उसे सफलता नहीं मिली। मांग और मुनाफा, दोनों का आकार बहुत बड़ा था तो दुनिया भर के नेताओं को कभी लगा नहीं कि वैश्विक जैव विविधता बनाए रखना इतनी बड़ी बात है। पर अब हमारे सामने इसका स्पष्ट और हर व्यक्ति की समझ में आ सकने लायक उदाहरण मौजूद है कि वन्य जीवों का व्यापार हमारे लिए कितना महंगा पड़ सकता है। दुनिया भर में फैली इतनी बड़ी स्वास्थ्य समस्या और अर्थव्यवस्था को हुए खरबों डॉलर के नुकसान के रूप में हम इसे सामने देख सकते हैं। यह सही है कि संरक्षण को लेकर दी जाने वाली दलीलें और इससे जुड़े नैतिक सिद्धांत पिछले दशकों में ज्यादा तवज्जो नहीं हासिल कर पाए हैं, लेकिन महामारी के महासंकट ने आगे का रास्ता साफ कर दिया है। 'दोबारा नहीं' का अपना संकल्प हम निकट भविष्य में तो पूरा नहीं कर पाएंगे, लेकिन अच्छी बात यह है कि हम इसे कर सकते हैं और हमें करना ही होगा।

अभी हम जिस सामाजिक दूरी या सोशल डिस्टैंसिग का पालन कर रहे हैं, यह उस तरह की तात्कालिक चीज नहीं, बल्कि उससे अलग एक दीर्घकालिक अवधारणा है।

बढ़ा हुआ खतरा

स्टीव ओसोफ्स्की।

इन पंक्तियों के लिखे जाते वक्त दुनिया में कोई नहीं जानता कि हमारी जिंदगियां अभी जैसी उलट–पुलट हालत में कब तक बनी रहने वाली हैं। वन्यजीवों का स्वास्थ्य, पालतू पशुओं का स्वास्थ्य और हमारा अपना स्वास्थ्य कैसे एक–दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं, इसी विषय पर केंद्रित वन्यजीव चिकित्सक के रूप में मैं चाहता हूं कि मेरे दौर के विश्व नागरिक यह जान लें कि कोरोनावायरस की महामारी रोकी जा सकती थी। यह खुद में कोई चकित करने वाली चीज नहीं है। इसकी भविष्यवाणी की जा सकती थी और की गई थी।

इसमें कोई शक नही कि जैसी मानवीय यंत्रणा और क्षति अभी हम पूरी दुनिया में देख रहे हैं, वह भयावह है, लेकिन जो चीज स्वास्थ्य से जुड़े एक पेशेवर व्यक्ति के रूप में मुझे और भी ज्यादा दुखी कर रही है, वह यह कि हमें इस मुकाम तक आना ही नहीं था। वन्य जीव संरक्षण और जन स्वास्थ्य के संधि बिंदु पर काम कर रहा मैं और मेरे सहकर्मी पिछले कई दशकों से यह चेतावनी देते आ रहे हैं कि प्राकृतिक विश्व के साथ हमारी अंतःक्रिया का जो रूप अभी बन रहा है, उससे महामारी का खतरा बहुत बढ़ गया है। मैं लोगों को बताना चाहता हूं कि नए पैदा होने

वाले ज्यादातर वायरस वन्य जीवन से ही आते हैं। लेकिन इसके लिए न तो जंगली जानवरों को दोषी ठहराने की जरूरत है, न ही उनके खिलाफ कोई जवाबी कार्रवाई करने की। बल्कि मैं तो इसके उलट राय दूंगा।

असल में अभी हमें जिस चीज की जरूरत है, उसे सबसे बेहतर रूप में कहा जा सकता है– 'व्यवहारगत दूरी' का नाम दिया जा सकता है। (अभी हम जिस सामाजिक दूरी या सोशल डिस्टैंसिग का पालन कर रहे हैं, यह उस तरह की तात्कालिक चीज नहीं, बल्कि उससे अलग एक दीर्घकालिक अवधारणा है।) सचाई यह है कि केवल स्तनपायी जीवों में ही सैकड़ों–हजारों तरह के वायरस होते हैं। मूलतः तीन ऐसे तरीके हैं, जिनसे हम अपने व्यवहार के जरिए इन वायरसों को मानव जीवन के दायरे में लाते हैं। हम वन्य जीवों को खाते हैं और उनके अंगों का व्यापार करते हैं। हम उन्हें पकड़ते हैं और अलग–अलग जीव जातियों को एक साथ रखते हैं ताकि उन्हें बाजार में बेचा जा सके। तीसरा तरीका यह कि हम खतरनाक ढंग से वन्य प्रकृति का विनाश कर रहे हैं और इस तरह खुद पर नए–नए रोगाणुओं के हमले का जोखिम बढ़ा रहे हैं।

वन्य प्रकृति और पृथ्वी की शेष प्रजातियों का जितना भी हिस्सा बचा है, हमारी प्रजाति उसकी लूट–खसोट पर यों आमादा है, जैसे कल ही सब कुछ खत्म हो जाने वाला हो। और यह कोई वक्रोक्ति नहीं है। वाकई ऐसा लग रहा है कि वह दिन आ गया है। लेकिन आज जब दुनिया के सामने यह बात ठीक से स्पष्ट हो चुकी है कि हमारा अपना स्वास्थ्य भी कुदरत के साथ हमारे व्यवहार पर ही निर्भर करता है तो इसका श्रेय एक छोटे से अदृश्य वायरस को जाता है। अगर हम कुदरत के प्रति अपना व्यवहार ठीक रखें तो जंगल, नदियां, सागर, घास के मैदान और इन सब में पाई जाने वाली जैव विविधता हमें साफ हवा, साफ पानी और ऐसा मौसम उपलब्ध कराती रहेगी, जिसमें स्वस्थ भोजन मुहैया कराने वाली प्रक्रिया लगातार चलती रह सके। इसीलिए चाहे दुनिया पर मंडराते गंभीर जलवायु संकट से निपटने की बात हो या अगली महामारी से इसे बचाने की, मानव सभ्यता के इतिहास के इस खास मोड़ पर हमें प्रकृति और अन्य जीवों के साथ अपने संबंधों को नए सिरे से पारिभाषित करना होगा।

अष्टयोग-5012

2		3		4		5
1	22	7	34	6	43	
	4		5		6	
	30	5	26	1	30	2
6	5	2		7		1
	36		36	3	29	4
	1		6		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5011 का हल

3	6	1	4	7	2	5
6	35	5	31	2	27	1
5	2	7	4	1	6	3
1	33	6	32	4	31	2
2	6	4	1	5	3	7
4	33	3	30	6	35	6
7	5	2	6	3	1	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

परीक्षण का सिलसिलां

मोहन। फिलहाल चमगादड़ में पाए जाने वाले कोरोना वायरस की स्पाइक प्रोटीन में उन चार अमीनो एसिड का बदलाव नहीं हुआ है जो कोविड–19 को विशेष बनाते हैं। पैंगोलिन में मिलने वाले कोरोना वायरस में यह बदलाव है, लेकिन वायरस का बाकी जीनोम कोविड–19 से कम मिलता है। चूंकि मनुष्य की एसीई2 रिसेप्टर प्रोटीन बिल्ली, नेवले व कुछ अन्य जानवरों से भी मिलती है इसलिए बहुत संभव है कि कोविड–19 इनमें भी संक्रमित हो लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि अन्य जानवरों में यह बीमारी कितनी घातक है या इनमें से कोई कोरोना का माध्यम है। एक संभावना यह भी है कि महामारी बनाने से पहले कुछ समय तक कोविड–19 के कम खतरनाक पूर्वज मनुष्य को संक्रमित करते रहे हों और धीरे–धीरे उन्होंने अडेप्ट किया और यह महामारी फूटी। फिलहाल कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन या कोई कारगर दवा नहीं है। अफरातफरी में बाजार में पहले से उपलब्ध और अन्य बीमारियों में दी जाने वाली दवाओं पर कुछ टेस्ट चल रहे हैं।